अत्यतं गोपनीय - केवल आतंरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

सीनियर स्कूल सर्टिफिके ट परीक्षा - **2020**

अंक-योजना HISTORY

SUBJECT CODE : 027 PAPER CODE : 61/2/2

सामान्य निर्देश :-

1. आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी भूल भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को **पढ़ और समझ** लें। **मूल्यांकन हम सबके लिए 10-12 दिन का मिशन है अतः यह आवश्यक है कि आप इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।**

2. मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिए, अपनी व्यक्तिगत व्याख्या या किसी अन्य धारणा के अनुसार नहीं। यह अनिवार्य है कि अंक-योजना का अनुपालन पूरी तरह और निष्ठापूर्वक किया जाए। **हालाँकि, मूल्यांकन करते समय नवीनतम सूचना और ज्ञान पर आधारित अथवा नवाचार पर आधारित उत्तरों को उनकी सत्यता और उपयुक्तता को परखते हुए पूरे अंक दिए जाएँ।**

3. मुख्य परीक्षक प्रत्येक मूल्यांकन कर्ता के द्वारा पहले दिन जाँची गई पाँच उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन की जाँच ध्यानपूर्वक करें और आश्वस्त हों कि मूल्यांकन-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जा रहा है। परीक्षकों को बाकी उत्तर पुस्तिकाएँ तभी दी जाएँ जब वह आश्वस्त हो कि उनके अंकन में कोई भिन्नता नहीं है।

4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (**×**)। मूल्यांकन-कर्ता द्वारा ऐसा चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए। परीक्षकों द्वारा यह भूल सर्वाधिक की जाती है।

5. यदि किसी प्रश्न का उपभाग हों तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर **दायीं ओर** अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग **बायीं ओर** के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए। **इसका अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाए।**

6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए। इसके अनुपालन में भी दृढ़ता बरती जाए।

7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों उन्हें ही स्वीकार करें/ उन्हीं पर अंक दें।

8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर अंक न काटे जाएँ।

9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने 0 – 80 का प्रयोग अभीष्ट है अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।

10. प्रत्येक परीक्षक को पूर्ण कार्य-अवधि में अर्थात 8 घंटे प्रतिदिन अनिवार्य रूप से मूल्यांकन कार्य करना है और प्रतिदिन मुख्य विषयों की बीस उत्तर-पुस्तिकाएँ तथा अन्य विषयों की 25 उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचनी हैं। (विस्तृत विवरण 'स्पॉट गाइडलाइन' में दिया गया है)

11. यह सुनिश्चित करें कि आप निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ न करें जो पिछले वर्षों में की जाती रही हैं –

- उत्तर पुस्तिका में किसी उत्तर या उत्तर के अंश को जाँचे बिना छोड़ देना।
- उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक देना।
- उत्तर या दिए गए अंकों का योग ठीक न होना।
- उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण पृष्ठ पर सही अंतरण न होना।
- आवरण पृष्ठ पर प्रश्नानुसार योग करने में अशुद्धि।
- योग करने में अंकों और शब्द में अंतर होना।
- उत्तर पुस्तिकाओं से ऑनलाइन अंकसूची में सही अंतरण न होना।
- कुल अंकों के योग में अशुद्धि
- उत्तरों पर सही का चिह्न (√) लगाना किंतु अंक न देना। सुनिश्चित करें कि (√) या **(×)** का उपयुक्त निशान ठीक ढंग से और स्पष्ट रूप से लगा हो। यह मात्र एक रेखा के रूप में न हो)
- उत्तर का एक भाग सही और दूसरा गलत हो किंतु अंक न दिए गए हों।

12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है।

14. सभी परीक्षक वास्तविक मूल्यांकन कार्य से पहले 'स्पॉट इवैल्यूएशन' के निर्देशों से सुपरिचित हो जाएँ।

15. प्रत्येक परीक्षक सुनिश्चित करे कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है, आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

16. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पुन: मूल्यांकन प्रक्रिया के अंतर्गत परीक्षार्थियों के अनुरोध पर निर्धारित शुल्क भुगतान के बाद उन्हें उत्तर पुस्तिकाओं की फोटो कॉपी प्राप्त करने की अनुमति देत। है।

MARKING SCHEME HISTORY-027
CLASS XII A I S S C E-March 2020
CODE NO. 61/2/2

प्र॰स॰	अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु	पृष्ठ स॰	अंक
	Section - A		
1.	बोधिसत्तो को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे। लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने के लिए और निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे।बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता करते थे।	पृ.स -103	1
2.	C (I और III)	पृ.स -11	1
3.	C (निषाद)	पृ.स -61	1
4.	**वैष्णववाद** वह हिंदू परंपरा है जिसमें विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है और **शैववाद** वह संकल्पना है जिसमें शिव को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है।	पृ.स -104	1
5.	शहरी केंद्रों / कोई शहरी विशेषता	पृ.स -5	1
6.	मथुरा से प्राप्त बुद्ध की मूर्ति **दृष्टिबधितों के लिए:** शालभंजिका	पृ.स -103 पृ.स -101	1
7.	फ़्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए **अथवा** स्तूपों में बुद्ध से जुड़े अवशेष गाड़ दिये जाते थे जिन्हे पवित्र समझा जाता है।	पृ.स -83 पृ.स -96	1
8.	गुलबदन बेगम **अथवा** अब्दुल हमीद लाहौरी	पृ.स -243 पृ.स -231	1

9.	दिल्ली	पृ.स -221	1
10.	D (कंधार को लेकर उसके सफाविदों के साथ सौहाद्रपूर्ण संबंध थे)	पृ.स -230	1
11.	B(I,II और III)	पृ.स -173	1
12.	C (हरिहर और बुक्का)	पृ.स -171	1
13.	वह सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह का चिकित्सक था।	पृ.स -122	1
14.	इब्न बतूता	पृ.स -118	1
15.	किताब-उल-हिन्द	पृ.स -117	1
16.	ब्रिटिश भारत में, नमक कानून द्वारा नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया है,	पृ.स -356	1
17.	D (अंग्रेज़ों की अनुमति के बिना सहयोगी पक्ष किन्हीं अन्य शासकों के साथ संधि कर सकेगा)	पृ.स -296	1
18.	जाति और धर्म का भेद किए बिना, समाज के सभी तबकों से एकता का आह्वान किया	पृ.स -301	1
19.	B(III,I,IV,II)	पृ.स - 361,364,391,411	1
20.	C [(A) और (R) दोनों सही हैं और(R),(A) की सही व्याख्या है।]	पृ.स -365	1
	<u>खंड ख</u>		
21.	<u>हड़प्पई लिपि</u> i. यह लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है। ii. इसमें चिन्हों की संख्या लगभग 375 से 400 के बीच है। iii. यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी iv. अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त हैं सबसे लंबे अभिलेख में लगभग 26 चिन्ह हैं। v. निश्चित रूप से यह वर्णमालीय लिपि नहीं थी vi. कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या	पृ.स -15	3

22.	**"अमर-नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक खोज थी"**: i. *अमर-नायक* सैनिक कमांडर थे। ii. उन्हें प्रशासन के लिए राज्य-क्षेत्र दिये जाते थे। iii. वे किसानों, शिल्पकर्मियों तथा व्यापारियों से भू राजस्व तथा अन्य कर वसूल करते थे। iv. घोड़ों और हाथियों के निर्धारित दल की मदद से वे विजयनगर शासकां को युद्ध के समय में सैनिक शक्ति प्रदान करने में सहायक होते थे। v. वे मन्दिरों तथा सिंचाई के सामानों का रख-रखाव करते थे। vi. *अमर-नायक* राजा को वर्ष में एक बार भेंट भेजा करते थे और अपनी स्वामिभक्ति प्रकट करने के लिए राजकीय दरबार में उपहारों के साथ स्वयं उपस्थित हुआ करते थे। vii. राजा कभी-कभी उन्हें एक से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करते थे। किन्ही तीन की व्याख्या	पृ.स -175	3
23.	"**स्वराज्य के लिए हिंदू,मुसलमान,पारसी और सिक्ख, सबको एकजुट होना पड़ेगा**" **असहयोग आंदोलन:** i गांधीजी ने खिलाफ़त आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए। ii हिंदू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे। iii आम लोगों ने चाहे हिंदू,मुसलमान,पारसी या सिक्ख हो सबने आंदोलन में भाग लिया। iv औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़ असहयोग की अपील पर किसानों,कामगारों और दूसरों ने औपनिवेशिक कानूनों की अवहेलना कर दी। v कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या	पृ.स -350	3

24.	**<u>वे परिस्थितियाँ जिनके अंतर्गत अंग्रेज़ अधिकारियों ने उन्नीसवीं शताब्दी में संथालों को राजमहल की पहाड़ियों में बसने के लिए आमंत्रित किया:</u>** i जब ब्रिटिश लोग पहाड़ियों का अपने बस में करने में असफल रहे तो उनका ध्यान संथालों की ओर गया। ii संथाल आदर्श बाशिंदे प्रतीत हुए, क्योंकि उन्हें जंगलों का सफ़ाया करने में कोई हिचक नहीं थी और वे भूमि को पूरी ताक़त लगाकर जोतते थे। iii संथालों को ज़मीनें देकर राजमहल की तलहटी में बसने के लिए तैयार कर लिया गया। iv संथालों ने हल चलाकर खेती की और स्थायी किसान बन गये । v कोई अन्य मान्य बिन्दु किन्ही तीन बिंदुओ की व्याख्या **अथवा** **<u>अठारहवी शताब्दी के अंत के दशकों में राजमहल की पहाड़ियों के पहाड़ी लोगों की आर्थिक और सामाजिक दशा</u>** : i शिकारियों, झूम खेती करने वालों, खाद्य बटोरने वालों, काठकोयला बनाने वालों, रेशम के कीड़े पालने वालों के रूप में पहाड़िया लोगों की ज़िंदगी जंगल स घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी। ii वे इमली के पेड़ों के बीच बनी अपनो झोपड़ियों मं रहते थे और आम के पेड़ों की छाव में आराम करते थे। iii उनके मुखिया लोग अपने समूह में एकता बनाए रखते थे, आपसी लड़ाई-झगड़े निपटा देते थे। iv पहाड़िया लोग बराबर उन मैदानों पर आक्रमण करते रहते थे जहाँ किसान एक स्थान पर बस कर अपनी खेती-बाड़ी किया करते थे। v पहाड़िया लोग अपने खाने के लिए तरह-तरह की दालें और ज्वार-बाजरा उगा लेते थे। vi पहाड़िया लोग खाने के लिए *महुआ* के फूल इकट्ठे करते थे, बेचने के लिए रेशम के कोया और राल और काठकोयला बनाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करते थे। vii वे पूरे प्रदेश को अपनी निजी भूमि मानते थे। viii वे बाहरी लोगों के प्रवेश का प्रतिरोध करते थे। ix व्यापारी लोग भी इन पहाड़ियों द्वारा निर्योत्रित रास्तों का इस्तेमाल करने की अनुमति प्राप्त करने हेतु उन्हें कुछ पथकर दिया करते थे।	पृ.स -270-271 पृ.स -267-269	3 3

	x कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या		
	खंड ग		
25.	<u>महाजनपदों की विशेषताएँ</u> i. अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन होता था। ii. *गण* और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था,इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। iii. भगवान महावीर और भगवान बुद्ध इन्हीं *गणों* से संबंधित थे। iv. प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे प्राय: किले से घेरा जाता था। v. ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों में शासकों के लिए नियम निर्धारित किए। vi. शासकों का काम किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूलना माना जाता था। vii. धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेनाएँ और नौकरशाही तंत्र तैयार कर लिए। viii. बाक़ी राज्य अब भी सहायक-सेना पर निर्भर थे जिन्हें प्राय: कृषक वर्ग से नियुक्त किया जाता था। ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु किन्ही चार बिंदुओ की व्याख्या <u>सबसे शक्तिशाली जनपद के रूप में मगध</u> i. मगध क्षेत्र में खेती की उपज खास तौर पर अच्छी होती थी। ii. लोहे की खदानें आसानी से उपलब्ध थीं जिससे उपकरण और हथियार बनाना सरल होता था। iii. जंगली क्षेत्रों में हाथी उपलब्ध थे जो सेना के एक महत्वपूर्ण अंग थे। iv. गंगा और इसकी उपनदियों से आवागमन सस्ता व सुलभ होता था। v. बिंबिसार, अजातसतु और महापद्मनंद जैसे महत्वाकांक्षी और शक्तिशाली शासक और उनकी नीतियाँ ।	पृ.स -29-31	4+4=8

	vi. राजगाह ('राजाओं का घर')मगध की राजधानी थी **जो** पहाड़ियों के बीच बसा एक किलेबंद शहर था। बाद में पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया गया, जिसकी गंगा के रास्ते आवागमन के मार्ग पर अवस्थिति थी। **किन्ही चार बिंदुओ की व्याख्या** **अथवा** **<u>मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ :</u>** i. मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे। वे थे पाटलिपुत्र,तक्षशिला,उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि। ii. सबसे प्रबल प्रशासनिक नियंत्रण साम्राज्य की राजधानी तथा उसके आसपास के प्रांतीय केंद्रों पर था। iii. भूमि और नदियों दोनों मार्गों से आवागमन बना रहना अत्यंत आवश्यक था। iv. यात्रियों के लिए सेना सुरक्षा का एक प्रमुख माध्यम रही होगी। v. मेगस्थनीज़ ने सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और छः उपसमितियों का उल्लेख किया है। vi. असोक ने अपने साम्राज्य को अखंड बनाए रखने के लिए *धम्म* का प्रचार भी किया। **किन्ही पाँच बिंदुओ की व्याख्या** **<u>अशोक के 'धम्म' के सिद्धांत :</u>** i. **असोक के** *धम्म* के सिद्धांत बहुत ही साधारण और सार्वभौमिक थे ii. असोक के अनुसार *धम्म* के माध्यम से लोगों का जीवन इस संसार में और इसके बाद के संसार में अच्छा रहेगा। iii. असोक ने अपने अधिकारियों और प्रजा के लिए संदेश पत्थरों और स्तंभों पर लिखवाए। iv. इनमें बड़ों के प्रति आदर, संन्यासियों और ब्राह्मणों के प्रति उदारता,	पृ.स -32-34	5+3=8

	शामिल है। v. सेवकों और दासों के साथ उदार व्यवहार। vi. दूसरे के धर्मों और परंपराओं का आदर। vii. *धम्म* के प्रचार के लिए *धम्म महामात्त* नाम से विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की गई। **किन्ही तीन बिंदुओ की व्याख्या**		
26.	<u>मुग़ल काल के दौरान गाँव पंचायतों और मुखियाओं की भूमिका:</u> i. गाँव की पंचायत में बुजुर्गों का जमावड़ा होता था। ii. जिन गावों में कई जातियों के लोग रहते थे, वहाँ अकसर पंचायत में भी विविधता पाई जाती थी। iii. **पंचायत द्वारा लिए गए निर्णय बाध्यकारी थे।** iv. पंचायत का सरदार एक मुखिया होता था जिसे मुकद्दम या मंडल कहते थे। v. गाँव के आमदनी व खर्चे का हिसाब-किताब अपनी निगरानी में बनवाना मुखिया का मुख्य काम था। vi. पंचायत का खर्चा गाँव के उस आम ख़जाने से चलता था जिसमें हर व्यक्ति अपना योगदान देता था। vii. पंचायत सामुदायिक **कल्याणकारी कार्य करती थी।** viii. पंचायत का काम यह तसल्ली करना था कि गाँव में रहने वाले अलग-अलग समुदायों के लोग अपनी जाति को हदों के अंदर रहें। ix. पूर्वी भारत में सभी शादियाँ मंडल की मौजूदगी में होती थीं। x. पंचायतों को जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासित करने जैसे ज़्यादा गंभीर दंड देने के अधिकार थे। xi. गाँव में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी। xii. राजस्थान में जाति पंचायतें अलग-अलग जातियों के लोगों के बीच दीवानी के झगड़ों का निपटारा करती थीं। xiii. **कोई अन्य मान्य बिंदु**	पृ.स-202-204	8

	समग्रता में मूल्यांकन अथवा **ग्रामीण दस्तकार:** i. गावों में कुल घरों के 25 फ़ीसदी घर दस्तकारों के थे। ii. कभी-कभी किसानों और दस्तकारों के बीच फ़र्क करना मुश्किल होता था। iii. रंगरेजी, कपड़े पर छपाई, मिट्टी के बरतनों को पकाना, खेती के औज़ारों को बनाना या उनकी मरम्मत करना। iv. कुम्हार, लोहार, बढ़ई, नाई, सुनार दस्तकार थे। v. गाँव वाले उन्हें अलग-अलग तरीक़ों से उन सेवाओं की अदायगी करते थे,या तो उन्हें फ़सल का एक हिस्सा दे दिया जाता था या फिर गाँव की ज़मीन का एक टुकड़ा। vi. कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही चार बिंदुओं की व्याख्या **गाँव एक छोटा गणराज्य:** i. ग्रामीण समुदाय बहुत अहम थे। ii. लोग सामूहिक स्तर पर संसाधनों और श्रम का बंटवारा करते थे। iii. संपत्ति की व्यक्तिगत मिल्कियत होती थी और जाति और जेंडर के नाम पर समाज में गहरी विषमताएं थीं। iv. कुछ ताकतवर लोग गाँव के मसलों पर फ़ैसले लेते थे। v. कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही चार बिंदुओं की व्याख्या	पृ.स -204-205	4+4
27.	**बंबई शहर की औपनिवेशिक स्थापत्य शैलियाँ:** i. शाही दृष्टि को साकार करने का एक तरीका नगर-नियोजन था।	पृ.स -338-343	8

	ii. इमारतों में क़िले, सरकारी दफ़्तर, शैक्षणिक संस्थान, धार्मिक इमारतें, स्मारकीय मीनारें, व्यावसायिक डिपो, गोदियाँ और पुल थे। iii. ये इमारतें शाही सत्ता, राष्ट्रवाद और धार्मिक वैभव जैसे विचारों का प्रतिनिधित्व करती थीं। iv. उनकी स्थापत्य शैली यूरोपीय शैली पर आधारित थी। v. उसमें एक अजनबी देश में जाना-पहचाना सा भूदृश्य रचने की और उपनिवेश में भी घर जैसा महसूस करने की अंग्रेज़ों की चाह प्रतिबिंबित होती है। vi. यूरोपीय शैली उनकी श्रेष्ठता, अधिकार और सत्ता का प्रतीक होगी। vii. यूरोपीय ढंग की दिखने वाली इमारतों से औपनिवेशिक स्वामियों और भारतीय प्रजा के बीच फ़र्क़ और फ़ासला साफ़ दिखने लगेगा। viii. औपनिवेशिक बंगले स्थापित किए गए। ix. सार्वजनिक भवनों के लिए मौटे तौर पर तीन स्थापत्य शैलियों का प्रयोग किया गया। x. नवशास्त्रीय या नियोक्लासिकल शैली जिसमें बड़े-बड़े स्तंभों के पीछे रेखागणितीय संरचनाओं का निर्माण इस शैली की विशेषता थी उदाहरण के लिए बम्बई का टाउन हॉल, एल्फ़िस्टन सर्कल या हॉर्निमान सर्कल। xi. नव-गॉथिक शैली थी जिसकी विशेषता थी ऊँची उठी हुई छतें, नोकदार मेहराबें और बारीक साज-सज्जा उदाहरण के लिए विक्टोरिया टर्मिनस, ग्रेट इंडियन पेनिन्स्युलर रेलवे कंपनी का स्टेशन और मुख्यालय xii. नयी मिश्रित स्थापत्य शैली विकसित हुई . इंडो-सारासेनिक शैली उदाहरण के लिए गेटवे ऑफ़ इंडिया, ताजमहल हाटल xiii. कोई अन्य मान्य बिंदु समग्रता में मूल्यांकन **अथवा**		

	1800 के बाद भारत में नगरीकरण में परिवर्तन की प्रवृतियाँ: i. सन् 1800 के बाद भारत में शहरीकरण की रफ़्तार धीमी रही। ii. उन्नीसवीं सदी और बीसवीं सदी के पहले दो दशकों तक देश की कुल आबादी में शहरी आबादी का हिस्सा बहुत मामूली और स्थिर रहा। iii. 1900 से 1940 के बीच 40 सालों के दरमियान शहरी आबादी 10 प्रतिशत से बढ़ कर लगभग 13 प्रतिशत हो गई थी। iv. छोटे क़स्बों के पास आर्थिक रूप से विकसित होने के ज़्यादा मौके नहीं थे। v. कलकत्ता,बम्बई और मद्रास नए व्यावसायिक एवं प्रशासनिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए। vi. 1853 में रेलवे की शुरुआत ने शहरों की कायापलट कर दी। vii. आर्थिक गतिविधियों का केंद्र परंपरागत शहरों से दूर जाने लगा। viii. रेलवे नेटवर्क के विस्तार के बाद रेलवे वर्कशॉप्स और रेलवे कालोनियों की भी स्थापना शुरू हो गई। जमालपुर, वॉल्टेयर और बरेली जैसे रेलवे नगर अस्तित्व में आए। ix. अधिकांश कार्यशील आबादी शहरों में आने लगी। x. मिलों के विकास ने औद्योगिकीकारण को बढावा दिया। xi. औद्योगिक शहरों जैसे कानपुर और जमशेदपुर का अस्तित्व में आना।। xii. समुद्र किनारे गोदाम, वाणिज्यिक कार्यालय, जहाज़रानी उद्योग के लिए बीमा एजेंसियों, यातायात डिपो और बैंकिंग संस्थानों की स्थापना होने लगी। xiii. औपनिवेशिक शहर नए शासकों की वाणिज्यिक संस्कृति को प्रतिबिम्बित करते थे। xiv. सिविल लाइन्स के नाम से नए शहरी इलाक़े विकसित किए गए जहाँ केवल गोरों को बसाया गया। xv. नस्ली विभेद पर आधारित व्हाइट टाउन और ब्लैक टाउन का अस्तित्व	पृ.स -322-327	8

	में आना। xvi. कोई अन्य मान्य बिंदु समग्रता में मूल्यांकन		
	खंड घ		
28.	<u>मुगल शहज़ादी जहाँआरा की तीर्थयात्रा 1643</u> 28.1 **जहाँआरा ने शेख के प्रति अपने विश्वास और भक्ति को किस प्रकार दर्शाया**? i. उसने दो बार की अख्तियारी नमाज़ अदा की। ii बहुत दिनों तक वह रात को बाघ के चमड़े पर नहीं सोयी। iii उसने अपने पैर मुकद्दस दरगाह की तरफ नहीं फैलाए। iv उसने अपनी पीठ उनकी तरफ नहीं की। v. वह पेड़ के नीचे दिन गुजारती थी। कोई दो बिन्दु 28.2 **उसने दरगाह को एक विशिष्ट तीर्थ और श्रद्धा का स्थल क्यों माना**? i. ईश्वर के प्रति उसके श्रद्धा और समर्पण की वजह से। ii. वह अपने मुर्शीद(गुरु) की मुरीद थी। iii. यह पारिवारिक परंपरा थी। iv. आशीर्वाद के लिए। v. कोई अन्य मान्य बिंदु। कोई दो बिंदु	पृ.स -157 पृ.स -157	2 2

	28.3 **उसने किस प्रकार दरगाह पर अपना सम्मान प्रकट किया**? i. उसने अपने जर्द चेहरे को उसकी चौखट की धूल से रगड़ा। ii वह नंगे पाव वहाँ की ज़मीन को चूमती हुई गयी। iii उसने मज़ार के चारों ओर फेरे लिए। iv उसने सबसे उम्दा इतर मुकद्दस दरगाह पर छिड़का। v गुलाबी दुपट्टा जो उसके सिर पर था उसे उतारकर मुकद्दस मज़ार के ऊपर रखा। कोई दो बिंदु	पृ.स -157	2
29.	**"एक गोली भी नहीं चलाई गयी"** 29.1 **प्रशासनिक व्यवस्था के समाप्त हो जाने के कारणों की परख कीजिये**? i. बंटवारे की प्रक्रिया चल रही थी। ii किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है। iii शासन तंत्र पूरी तरह नष्ट हो चुका था। कोई दो बिंदु 29.2 **हालत को नियंत्रित करने के लिए अंग्रेज़ अधिकारी कोई कदम क्यों नहीं उठा सके**? i. अंग्रेज़ अफ़सरों को सूझ नहीं रहा था कि हालात को कैसे संभाला जाए। ii. किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है। iii. अंग्रेज़ भारत छोड़ने की तैयारी में लगे थे। कोई दो बिंदु 29.3 **क्या आप यह सोचते है कि ज़िला मजिस्ट्रेट की भूमिका न्यायसंगत थी**?	पृ.स -392 पृ.स -392	2 2

	उत्तर हाँ या नहीं हो सकता है। (विद्यार्थी के स्वयं के विचार)	पृ.स -392	2
30.	**<u>"उचित" सामाजिक कर्तव्य</u>** 30.1 **द्रोण ने एकलव्य को अपना शिष्य स्वीकार करने से क्यों मना कर दिया**? i.द्रोण धर्म समझते थे और केवल कुरु राजकुमारों को शिक्षा देते थे। ii. एकलव्य वनवासी निषाद था। iii.द्रोण ब्राह्मण थे और कुरु राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे। कोई दो बिंदु 30.2 **एकलव्य ने तीर चलाने की उत्तम कुशलता कैसे प्राप्त की**? i. द्रोण के मना करने पर एकलव्य वन में लौट आया। ii. उसने मिट्टी से द्रोण की प्रतिमा बनाई और उसके सामने तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। iii.वह तीर चलाने में सिद्धहस्त हो गया। कोई दो बिंदु **30.3 एकलव्य ने अपने-आप को पांडवों के समक्ष द्रोण का शिष्य होने का परिचय क्यों दिया?** i. जब कुरु राजकुमारों का कुत्ता उसे देखकर भौंकने लगा तो वह क्रोधित हो गया। ii. उसने सात तीर चलाकर उसका मुँहबंद कर दिया। iii. पांडव तीरंदाज़ी का यह अदभुत दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गये	पृ.स -62 पृ.स -62 पृ.स -62	2 2 2

	और एकलव्य को तलाशा। iv. उसने स्वयं को द्रोण का शिष्य बताया। कोई दो बिंदु		
	खंड ड.		
31.	<u>भरा हुआ संलग्न मानचित्र देखें</u> **<u>केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए</u>** : 31.1 **विकसित हड़प्पाई पुरास्थल (कोई तीन):** हड़प्पा,मोहनजोदड़ो, लोथल,नागेश्वर,कालीबंगन,राखीगढ़ी,बनावली, धौलावीरा, चन्हुदडो, बालाकोट **अथवा** 1857 **के विद्रोह के केंद्र** (**कोई तीन**): कानपुर,झाँसी,मेरठ,दिल्ली,आज़मगढ़,लखनऊ,कलकत्ता,बनारस,ग्वालियर,जबलपुर, आगरा,अवध 31.2 **राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र (कोई तीन):** चंपारण,खेड़ा,अहमदाबाद,बनारस,अमृतसर,चौरी चौरा,लाहौर,बारदोली,दांडी,बंबई,कराची		3+3=6 1x3=3 1x3=3

61/2/1, 61/2/2, 61/2/3

प्रश्न सं. 31.1 और 31.2 के लिए

For question no. 31.1 and 31.2